भारत रत्न पंडित रविशंकर जयंती

चर्चा में क्यों?

7 अप्रैल, 2025 को सितार वादक और संगीतकार पंडित रविशंकर की 103वीं जयंती मनाई गई।

मुख्य बिंदु

- **पंडित रविशंकर के बारे में:**

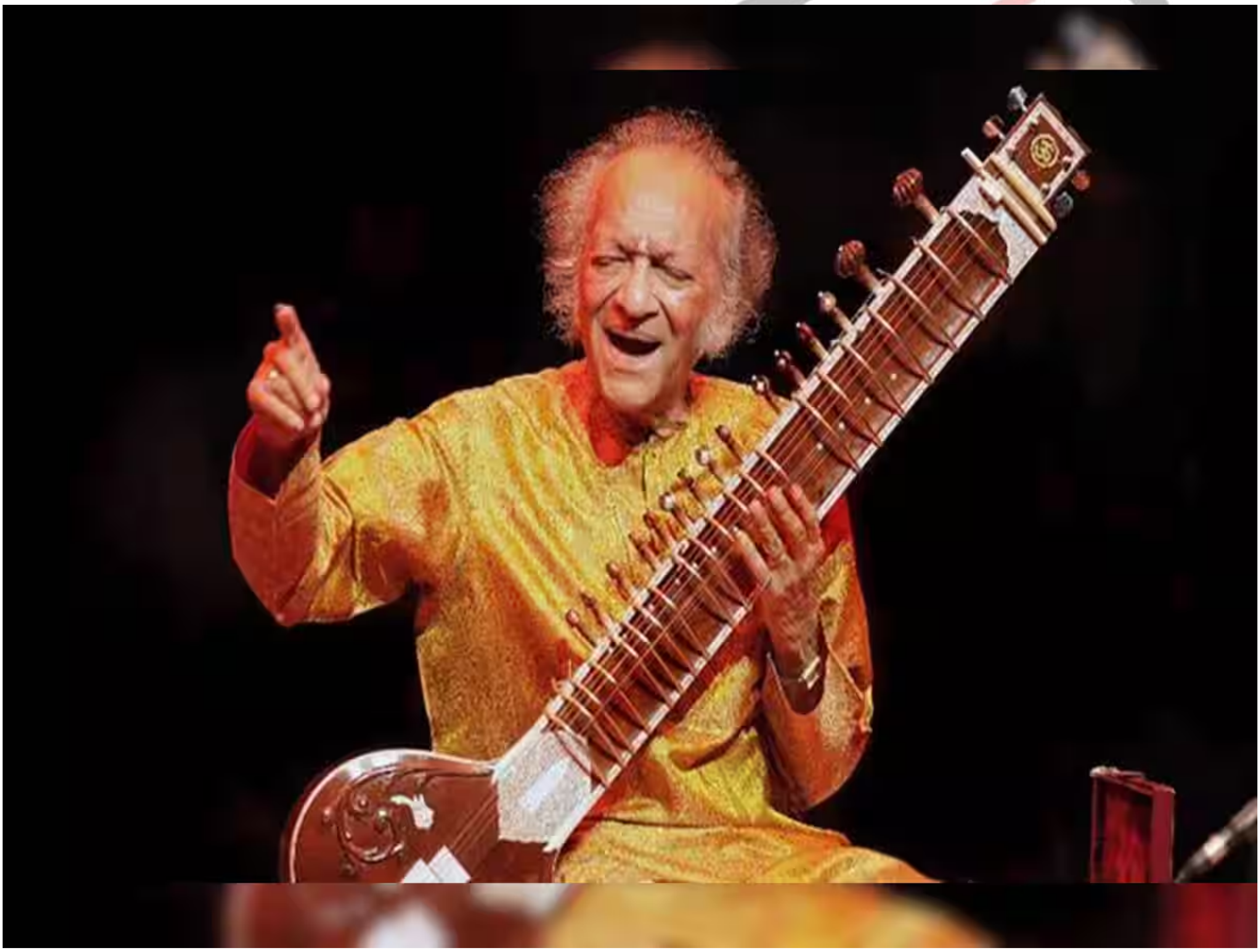

  - पंडित रविशंकर, जिनका जन्म 7 अप्रैल, 1920 को **वाराणसी** में हुआ था, [भारतीय शास्त्रीय संगीत](#) के महान सितारवादक और संगीतकार थे।
  - उनका मूल **नाम रवींद्र शंकर चौधरी था** और वे अपने पिता श्याम शंकर चौधरी और माता हेमांगिनी देवी के सातवें पुत्र थे।

- 18 साल की उम्र में उन्होंने सितार सीखना शुरू किया और इसके लिये **मैहर के उस्ताद अलाउद्दीन खान से दीक्षा ली।**
- उन्होंने 25 वर्ष की आयु में प्रसिद्ध गीत **"सारे जहाँ से अच्छा" की पुनः रचना की।**
- उन्होंने वर्ष 1949 से 1956 तक नई दिल्ली में ऑल इंडिया रेडियो के संगीत निदेशक के रूप में कार्य किया।
- इसके बाद, 1960 के दशक में वायलिन वादक **येहुदी मेनुहिन और जॉर्ज हैरीसन** के साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी और प्रस्तुतियाँ दीं, जिससे इसे **पश्चिमी दुनिया** में लोकप्रिय बनाने में मदद मिली।
- पंडित रविशंकर ने **भारतीय शास्त्रीय संगीत** को पश्चिमी दुनिया से परिचित कराया।
- बीटल्स के जॉर्ज हैरीसन ने उन्हें **'विश्व संगीत का गॉडफादर'** बताया।
- वर्ष 1986 से 1992 तक वह राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे।
- 11 दिसंबर, 2012 को 92 वर्ष की आयु में उनका निधन गया।

- **सम्मान और पुरस्कार**
  - **यूनेस्को सद्भावना राजदूत (1999):** सांस्कृतिक योगदान के लिये नियुक्त।
  - **पद्म भूषण (1967):** भारत का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
  - **पद्म विभूषण (1981):** असाधारण सेवा के लिये दूसरा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार।
  - **कालिदास सम्मान (1986):** भारतीय शास्त्रीय संगीत में उत्कृष्टता के लिये मध्य प्रदेश का प्रमुख पुरस्कार।
  - **संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (1987):** भारत में संगीत के क्षेत्र में श्रेष्ठता का प्रतीक।
  - **ग्रैमी पुरस्कार (चार बार):** 2013 में मरणोपरांत लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार सहित, विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित।
  - उन्हें वर्ष 1999 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त उन्हे अनेक **सम्मान और पुरस्कार मिले, जिनमें शामिल हैं:**

भारतीय शास्त्रीय संगीत

- **परिचय:**
  - शास्त्रीय भारतीय संगीत, संगीत का एक जटिल और प्राचीन रूप है जिसकी जड़ें **हिंदू धर्म** के सबसे **प्राचीन ग्रंथ वेदों** में निहित हैं, जो लगभग 1500 ईसा पूर्व के हैं।
  - इसे दो मुख्य परंपराओं में विभाजित किया गया है: **हिंदुस्तानी संगीत,** (जो उत्तर भारत में प्रचलित है) और **कर्नाटक संगीत** (जो दक्षिण भारत में लोकप्रिय) है।
- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:**
  - भारतीय शास्त्रीय संगीत की **उत्पत्ति सामवेद** जैसे प्राचीन ग्रंथों से हुई है, जो इसकी गहन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं भारतीय परंपराओं से संबंध को प्रदर्शित करता है।
- **महत्त्व**
  - शास्त्रीय संगीत में **गुरु-शिष्य परंपरा** (शिक्षक-शिष्य परंपरा) की प्रमाणिकता को संरक्षित करते हुए एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान एवं कौशल का हस्तांतरण सुनिश्चित हुआ है।
  - शास्त्रीय संगीत में नियमों तथा परंपराओं (जैसे कि **राग प्रणाली**, जो पीढ़ियों से चली आ रही है) का पालन किया गया है, जिससे भारत की संगीत विरासत का संरक्षण सुनिश्चित हुआ है।
  - शास्त्रीय संगीत एक सामान्य सांस्कृतिक सूत्र के रूप में कार्य करते हुए विविध पृष्ठभूमि के लोगों को एकजुट करने में भूमिका निभाता है।
  - इसकी क्षेत्रीय, भाषायी एवं धार्मिक बाधाओं को कम करने के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देने में भूमिका है।
  - शास्त्रीय संगीत में **विभिन्न क्षेत्रीय शैलियों एवं वाद्ययंत्रों** का समायोजन शामिल है, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता का परिचायक है। इस समावेशिता से विभिन्न समुदायों के बीच सद्भाव तथा समन्वय को बढ़ावा मिलता है।